प्रारब्ध एवं पुरुषार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रारब्ध का अर्थ है पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म जो वर्तमान समय में उदय भाव को प्राप्त होता है। यह स्वचालित है। यह हो रहा है और होता रहेगा। प्रारब्ध को भाग्य कहते हैं। भाग्य पूर्वजन्म के पुरुषार्थ से निर्मित होता है। भाग्य को जाना नहीं जा सकता। पुरुषार्थ का अर्थ मनुष्य के द्वारा किया जाने वाला कर्म है। पुरुषार्थ और भाग्य एक–दूसरे के पूरक हैं। पुरुषार्थ ही भाग्य बन जाता है। बिना पुरुषार्थ के भाग्य नहीं बनता। यह कर्म चक्र का खेल है। जो कुछ भी प्रारब्ध में लिखा है उसे भोगे बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। सुख–दुःख प्रारब्ध के अधीन है। कभी–कभी बहुत पुरुषार्थ करने के बाद भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होता है। इसका अर्थ यह है कि पिछले जन्म में मैंने कुछ ऐसा कार्य किया है जिसके कारण परिणाम अवरूद्ध हो जा रहा है।

प्रारब्ध को भोगे बिना वर्तमान जीवन ठीक नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में सुदामा और भगवान श्रीकृष्ण के दृष्टान्त को प्रस्तुत किया जा सकता है। दोनों बचपन के मित्र थे। किन्तु दोनों में महान अन्तर था। एक तीनों लोकों के स्वामी और दूसरे दर–दर की ठोकरें खाने वाले और भिक्षा से जीवनयापन करने वाले थे। एक बार भगवान की पत्नी रूकमणी के द्वारा पूछे जाने पर श्रीकृष्ण ने कहा कि सुदामा मेरा मित्र है किन्तु उसके प्रारब्ध में जो कुछ भी लिखा है उसे मैं भी बदल नहीं सकता। प्रारब्ध को भोगे बिना मुक्ति नहीं मिल सकती। प्रारब्ध और कृत कर्मों के परिणाम भोग लेने पर भगवान की ऐसी कृपा हुई कि सुदामा का परिवार धन धान्य से परिपूर्ण हो गया। जिसके भाग्य में जो सुख–दुःख लिखा है उसे भोगना ही पड़ता है, उसे कोई मिटा नहीं सकता। महत्वपूर्ण बात यह है कि विपत्ति में भी धर्म और धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। सुख–दुःख जीवन में आते–जाते रहते हैं।

कुछ लोग पुरुषार्थ को महत्व देते हैं और कहते हैं कि पुरुषार्थ करके मैंने धन कमाया है। हमारी भौतिक समृद्धि पुरुषार्थ का परिणाम है। किन्तु ऐसी बात नहीं है। यह भी पूर्वजन्म के

अच्छे कर्मों का परिणाम है। पुरुषार्थ केवल निमित्त है। सब कुछ पूर्व निर्धारित है। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध बनता है। यदि हम पुरुषार्थ न करें तो प्रारब्ध कैसे बनेगा? सोये हुए सिंह के मुख में मृग अपने आप प्रवेश नहीं कर जाता। उसको पकड़ने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। पुरुषार्थ और प्रारब्ध एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। कुछ लोग भाग्य को मानते है कुछ लोग पुरुषार्थ को। पुरुषार्थ के बिना भाग्य नहीं बनता। जो हम इस जन्म में कर रहे है चाहे वह अच्छा कर्म है या बुरा इनमें से कुछ कर्मों का फल तो हमें इसी जन्म में प्राप्त हो जाता है और कुछ कर्म प्रारब्ध बन करके अगले जन्म में प्राप्त होते है। भाग्य और पुरुषार्थ का खेल यही से प्रारंभ हो जाता है।

इस संसार में कुछ लोग भाग्यवादी है और कुछ लोग पुरुषार्थवादी। भाग्यवादी भाग्य को ही मानकर चलते है ओर कहते है कि जो कुछ भाग्य में लिखा है वही सब होकर रहेगा। पुरुषार्थवादी कहते है कि पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य को बदला जा सकता है। भाग्य के भरोसे बेठे रहने से कार्य नहीं होता। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते है जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती है अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते है।

हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती है वे स्वयं की कमियों को देखने की बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते है जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते है। वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है। भाग्य और पुरुषार्थ एक–दूसरे के पूरक है। पुरुषार्थि अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है।

कुछ लोग ऐसे होते है जो भाग्य भरोसे बैठे रहते है। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते है और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते है। ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं की कमियों को खोजने

तथा उनको ढूंढ़ने के बजाय अपने भाग्य को दोष देते है। महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने पुरुषार्थ से अंग्रेजी दास्ता से मुक्ति दिलायी। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म का मार्ग पुरुषार्थ का मार्ग है। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अडिग रहना चाहिए।

पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करता है। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज अथवा देश को गौरवान्वित करता है। भाग्य हमारे कर्मों का फल है कोई ईश्वर इच्छित वस्तु नहीं। हम नित्य प्रति कुछ न कुछ क्रिया करते है और उसका परिणाम भी हमें मिलता है। यही परिणाम ही हमारा भाग्य होता है। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए दी है कि वह अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करें।